2
विद्यमान विशेषताएं

किशनगढ़ नगर मध्य अरावली क्षेत्र में अपेक्षाकृत ऊँचें पठारी भू–भाग पर अजमेर जिले में स्थित है। यह राजस्थान के मध्यवर्ती भाग में 26°34'उत्तरी अक्षांश एवं 74°52' पूर्वी देशान्तर पर माध्य समुद्र तल से लगभग 433 मीटर की ऊँचाई पर स्थित है। यह नगर राष्ट्रीय राजमार्ग–8 (दिल्ली–अहमदाबाद), राष्ट्रीय राजमार्ग–79ए(किशनगढ़–नसीराबाद), राज्य राजमार्ग–8 (किशनगढ़–संगरिया) एवं राज्य राजमार्ग–7ई(सरवाड–किशनगढ़) के जंक्शन पर स्थित है। यह जिला मुख्यालय अजमेर से 26 कि.मी. एवं राज्य की राजधानी जयपुर से 106 कि.मी. की दूरी पर स्थित है। यह नगर आस–पास के शहरों एवं कस्बों यथा नसीराबाद, भीलवाड़ा, चित्तौड़, अजमेर, ब्यावर, मकराना, जयपुर आदि से सड़क मार्ग से जुड़ा हुआ है तथा यह दिल्ली–अहमदाबाद ब्रोड़ गेज रेल लाईन पर स्थित है।

2.1 भौतिक स्वरूप एवं जलवायु

किशनगढ़ नगर अरावली पर्वतमाला के पठारी भू–भाग पर स्थित है। किशनगढ़ की पुरानी आबादी के उत्तर में गुन्दोलाव तालाब स्थित है। अरावली पर्वत श्रृखंला नगर के दक्षिण–पश्चिम से उत्तर–पूर्व की ओर निकलती है।कुछ पहाड़ी क्षेत्र को छोड़कर नगर का अधिकांश भू–भाग समतल है। जलवायु के आधार पर मोटे तौर पर राजस्थान को दो भागों यथा पश्चिमी राजस्थान जहां मरूस्थलीय क्षेत्र होने के कारण शुष्क जलवायु है तथा पूर्वी राजस्थान जलवायु की दृष्टि से अर्द्ध शुष्क क्षेत्र के अन्तर्गत आता है। किशनगढ़ का समीपस्थ मौसम विज्ञानकेन्द्रअजमेर है। अतः जलवायु संबंधी सूचनायें अजमेर को आधार मानकर ली गई हैं। अर्द्ध शुष्क क्षेत्र में बसा होने के कारण यहां की जलवायु प्रायः सम्पूर्ण वर्ष गर्म एवं शुष्क रहती है।गर्मियों में मौसम गर्म एवं शुष्क तथा सर्दी में ठंडा रहता है। सर्दी का मौसम दिसम्बर से फरवरी तकरहता है तथा इसके पश्चात् मार्च से जून के अंत तक गर्मी का मौसम रहता है। जुलाई से सितम्बर के मध्य तक का समय वर्षा ऋतु का रहता है। मार्च से जून के महिने में तापमान में निरन्तर वृद्धि होती है तथा मई एवं जून के मध्य तक का समय वर्ष का सर्वाधिक गर्म समय रहता है। मई के महिने में दैनिक औसत अधिकतम तापमान 39.5°सेंटीग्रेड तथा

औसत दैनिक न्यूनतम तापमान 27.3°सेंटीग्रेड रहता है। जून के महिने में रात का तापमान मई की अपेक्षाकृत थोड़ा अधिक रहता है। मई के महिने में कभी–कभी तापमान 47°सेंटीग्रेड तक पहुंच जाता है। जून के अंत में वर्षा के आगमन से तापमान में कमी आने लगती है लेकिन आर्द्रता की अधिकता के कारण मौसम आरामदायक नहीं रहता। वर्षा काल मध्य सितम्बर तक रहता है एवं तत्पश्चात् अक्टूम्बर में तापमान पुनः बढ़ने लगता है। नवम्बर के मध्य से जनवरी तक का समय शीत ऋतु का रहता है। इस समय दिन एवं रात के तापमान में गिरावट होने लगती है। जनवरी माह में सर्वाधिक ठंड रहती है तथा इस महिनें में औसत दैनिक अधिकतम तापमान 22.2°सेंटीग्रेड एवं औसत दैनिक न्यूनतम तापमान 7.3°सेंटीग्रेड रहता है। जनवरी महिने में कभी–कभी तापमान जमाव बिन्दु तक पहुंच जाता है। यहां 19 मई, 1977 में सर्वाधिक तापमान 47.4°सेंटीग्रेड तथा 16 जनवरी, 1935 में न्यूनतम तापमान -2.8°सेंटीग्रेड रिकॉर्ड किया गया। दक्षिणी–पश्चिमी मानसून काल में सापेक्षित आर्द्रता 60 प्रतिशत से अधिक रहती है तथा वर्ष के शेष समय में हवाऐं शुष्क रहती हैं। ग्रीष्म काल में जो कि वर्ष का सर्वाधिक शुष्क समय होता है। दोपहर के बाद आर्द्रता 20–25 प्रतिशत तक रह जाती है।

2.2 क्षेत्रीय परिप्रेक्ष्य

किशनगढ़ नगर राजस्थान के दक्षिण–पूर्वी भाग में राष्ट्रीय राजमार्ग–8 एवं 79–ए, राज्य राजमार्ग–7, राज्य राजमार्ग–7ई पर स्थित अजमेर जिले का महत्वपूर्ण उपखण्ड मुख्यालय है।

खनिजों की दृष्टि से किशनगढ़ उपखण्ड सम्पन्न है। यहां पायरायट, राऊ, फास्फोट, ताम्बा, आणविक पदार्थ प्रचुर मात्रा में खानों में संचित है। ईमारती पत्थर व ग्रेनाईट भी जिले में पर्याप्त हैं। इनका दोहन होने से बड़े कारखाने लगने की पूरी सम्भावना है। चूना पत्थर व जिप्सम भी सीमेंन्ट उद्योग को कच्चा माल दे सकते हैं। यहां पर राजस्थान के सभी भागों जहां मार्बल निकलता है से मार्बल लालया जाकर कटिंग एवं पॉलिशिंग के पश्चात् विपणन किया जाता है। राजस्थान एवं आस–पास के राज्यों से लोग यहां आकर मार्बल क्रय करते है। मार्बल कटिंग एवं पॉलिशिंग कार्य में अजमेर, नागौर, एवं जयपुर जिले के ग्रामीण क्षेत्रों के श्रमिक लगे हुए हैं।

इस क्षेत्र की आजीविका का मुख्य साधन कृषि है। यहां की मुख्य फसलों में मानसूनी फसल बाजरा, मोठ, मूंग तथा शीतऋतु फसलों में गेहुं, जौ, चना, सरसों, तारामीरा, रजका आदि हैं।

नगर में जयपुर रोड़ पर रिको औद्योगिक क्षेत्र विकसित है। यहां प्रमुख औद्योगिक इकाइयों में ग्रेनाइट, विद्युत ट्रांसफार्मर, विद्युत पोल, आयरन कुटीर उद्योग, बन्धेज साड़ी, कपडा रंगाई व छपाई की ईकाइयां कार्यरत हैं।

2.3 ऐतिहासिक पृष्ठ भूमि

किशनगढ़ की स्थापना 17वीं शताब्दी के आरम्भ में श्री किशन सिंह जी द्वारा 1611 ई. में की गई। इनके बाद महाराजा रूप सिंह जी द्वारा 1653 में किले का निर्माण कराया गया। नगर का आरम्भिक विकास किले एवं पूर्व महल के आस–पास के क्षेत्र में सघन रूप से हुआ।

वर्ष 1868 में दिल्ली–अहमदाबाद रेलवे लाइन की स्थापना हुई तथा मदनगंज में रेलवे स्टेशन का निर्माण हुआ जिसके फलस्वरूप नगर के विकास को नया आयाम मिला। रेलवे स्टेशन के समीप के क्षेत्र का विकास महाराजा श्री मदन सिंह जी द्वारा करवाया गया। इनके द्वारा 1915 में जयपुर–अजमेर रोड़ पर महाराजा कॉटन मिल की स्थापना की गई। मिल की स्थापना के फलस्वरूप नगर का विकास तीव्र गति से हुआ। देश के विभाजन से पाकिस्तान से शरणार्थियों के यहां आकर बसने से नगर के विकास में तीव्र वृद्धि हुई। इस काल में गुन्दोलाव तालाब के उत्तर में कई बस्तियों का विकास हुआ। मदनगंज क्षेत्र में अजमेर रोड़ पर 1967 में आदित्य मिल की स्थापना हुए। इसी काल में इसी काल में किशनगढ़ एवं मदनगंज के मध्य के क्षेत्र में आधारभूत सामाजिक सुविधाएँ यथा चिकित्सालय एवं महाविद्यालय का निर्माण हुआ। मदनगंज के उत्तर में अजमेर बाईपास के निर्माण से नगर का विकास बाईपास की ओर होने लगा। रेलवे लाईन एवं बाईपास के मध्य स्थित भूमि पर आवासीय क्षेत्र विकसित हुए तथा बाईपास के सहारे कृषि उपज मण्डी एवं गोदामों का निर्माण हुआ। आइ.डी.एस.एम.टी. योजना के अन्तर्गत वर्ष 1990–2000 के मध्य इन्दिरा नगर आवासीय योजना विकसित की गई।

रूपनगढ़ रोड़ पर औद्योगिक क्षेत्र विकसित हुआ जो मार्बल उद्योग एवं व्यवसाय का प्रमुख केन्द्र बन गया।

वर्ष 2001–2011 के मध्य के काल में राजस्थान राज्य औद्योगिक विकास एवं विनियमन निगम (रीको) द्वारा राष्ट्रीय राजमार्ग–79एपर सिलोरा ग्राम में औद्योगिक क्षेत्र विकसित किये जाने से नगर का विकास दक्षिण–पूर्व दिशा में आरम्भ हुआ। वर्ष 1990 से 2011 के काल में नगर के पश्चिम की ओर अजमेर रोड़ एवं खोड़ा गणेश को जाने वाली सड़क के आस–पास आवासीय क्षेत्र विकसित होने लगे। इस क्षेत्र में राजस्थान आवासन मण्डल द्वारा विकसित आवासीय कोलोनी एवं कृषि भूमि को भूखण्ड़ों मे उप विभाजित कर विकसित की गई कोलोनियां प्रमुख है। जयपुर–अजमेर 6 लेन रोड़ के निर्माण से किशनगढ़ का विकास जयपुर की ओर टोल प्लाजा तक तीव्र गति से होने लगा है।

2.4 जनसांख्यिकी

जनसंख्या की दृष्टि से किशनगढ़ नगरअजमेर जिले में अजमेर के पश्चात् दूसरे स्थान पर आता है। वर्ष 1901 में यहां की जनसंख्या 12,663 थी जो वर्ष 2011 में बढ़कर 1,55,019 हो गई तथा जनसंख्या की दृष्टि से राज्य में यह 14वें स्थान पर आता है। वर्ष 1901 से 1921 के काल में यहां की जनसंख्या में नकारात्मक वृद्धि हुई जिसका प्रमुख कारण अकाल एवं महामारी जैसी प्राकृतिक आपदाऐं रही हैं। वर्ष 1931 से 1951 के मध्य यहां की जनसंख्या में निरन्तर वृद्धि होती रही। नगर की जंनसख्या में सर्वाधिक वृद्धि 77.72, वर्ष 1941 से 1951 के दशक में रही जिसका प्रमुख कारण देश के विभाजन के फलस्वरूप शरणार्थियों का आगमन रहा है। महाराजा मिल के बंद होने से वर्ष 1951 से 1961 की दशक में जनसंख्या वृद्धि दर-1. 76 रही। इसके पश्चात् जनसंख्या में निरन्तर वृद्धि हुई है। वर्ष 1991 से 2001 के मध्य मार्बल उद्योग के विकास के कारण जनसंख्या वृद्धि दर 49.79 प्रतिशत रही तथा 2001 से 2011 के दशक में वृद्धि दर 33.38 हुई। इस प्रकार वर्ष 1981 से 2011 अर्थात् 20 वर्ष की अवधि में नगर की जनसंख्या में लगभग ढ़ाई गुणा वृद्धि हुई। तालिका–1 में किशनगढ़ की जनसंख्या वृद्धि–प्रवत्तिको दर्शाया गया है :–

तालिका 1

जनसंख्या वृद्धि प्रवृत्ति, किशनगढ़ 1901–2011

वर्ष	जनसंख्या	अन्तर	प्रतिशत
1901	12663	–	–
1911	10418	2245	–17.73
1921	9452	–966	–9.27
1931	11929	2477	26.21
1941	14459	2530	21.21
1951	25696	9237	77.72
1961	25244	–452	–1.76
1971	37405	12161	48.17
1981	62032	24627	65.84
1991	81948	19916	32.10
2001	116222	34274	41.82
2011	155019	38797	33.38

स्त्रोत : भारतीय जनगणना

2.5 व्यावसायिक संरचना

वर्ष 1991 की जनगणना के अनुसार किशनगढ़ नगर में कुल जनसंख्या में से 22,308 व्यक्ति विभिन्न व्यवसायों में कार्यरत थे। जो कुल जनसंख्या का 27.22 प्रतिशत है। वर्ष 2001 में कार्यशील व्यक्तियों की संख्या बढ़कर 33,708 हो गई एवं सहभागिता अनुपात 29 प्रतिशत हो गया। वर्ष 2011 में कार्यशील व्यक्तियों का सहभागिता अनुपात 30 प्रतिशत होने के अनुमान है। तालिका–2 के तुलनात्मक अध्ययन से स्पष्ट होता है कि उद्योग, निर्माण, व्यापार एवं वाणिज्य गतिविधियों में कार्यशील व्यक्तियों के प्रतिशत में वृद्धि हुई है। औद्योगिक गतिविधियों में वर्ष 1991 में कार्यशील व्यक्ति 9,094 थे, जिनके वर्ष 2011 में बढ़कर 19,533 होने की सम्भावना है। इसी प्रकार व्यापार एवं वाणिज्य में कार्यरत व्यक्तियों की संख्या वर्ष 1991 में 4,396 थी जो बढ़कर वर्ष 2001 में 6,742 हो गई तथा वर्ष 2011 में 9,766 होने की संभावना है। तालिका–2 के अवलोकन से स्पष्ट है कि किशनगढ़ औद्योगिक, व्यापार एवं वाणिज्यिक तथा प्रशासनिक गतिविधियों के केन्द्र के रूप में विकसित हुआ है।

तालिका–2

व्यावसायिक संरचना, किशनगढ़, 1991–2001–2011

क्र. सं.	व्यवसाय	1991		2001*		2011*	
		कार्यशील व्यक्ति	कुल कार्यशील व्यक्तियों का प्रतिशत	कार्यशील व्यक्ति	कुल कार्यशील व्यक्तियों का प्रतिशत	कार्यशील व्यक्ति	कुल कार्यशील व्यक्तियों का प्रतिशत
1	काश्तकार, कृषि मजदूर, वानिकी खनन, एवं तत्संबंधित कार्य	1226	5.50	1890	5.71	1860	4.00
2	उद्योग	9094	40.78	13820	40.99	19533	42.00
3	निर्माण	1101	4.93	1685	4.99	2325	5.00
4	व्यापार एवं वाणिज्य	4396	19.70	6742	20.00	9766	21.00
5	परिवहन एवं संचार	1567	7.02	2492	7.39	3488	7.50
6	अन्य सेवायें	4927	22.07	7079	21.00	9534	20.50
	कुल	22308	100.00	33708	100.00	46506	100.00
कामगारों का प्रतिशत		27.22		29.00		30.00	
जनसंख्या		81948		116222		155019	

*स्त्रोत : भारतीय जनगणना एव*अनुमान*

2.6 मास्टर प्लान– 1989–2011 की समीक्षा

राज्य सरकार की अधिसूचना क्रमांक प.10(15)नविआ/81 दिनांक 25 अगस्त, 1993 द्वारा राजस्थान नगर सुधार अधिनियम, 1959 की धारा (7) के अन्तर्गत किशनगढ़ नगरीय क्षेत्र जिसमें 9 राजस्व ग्राम सम्मिलित थे, के मास्टर प्लान का अनुमोदन किया गया। किशनगढ़ नगर का प्रथम मास्टर प्लान आधार वर्ष 1989 रखते हुए वर्ष 2011 तक की अवधि तक के लिए बनाया गया था। उक्त मास्टर प्लान प्रस्तावों के अनुसार वर्ष 2011 की अवधि तक के लिए प्रस्तावित जनसंख्या 2,00,000 थी, जबकि वर्ष 2011 की जनगणना के अनुसार नगर की वास्तवित जनसंख्या 1,55,019 ही रही। इस प्रकार प्रस्तावित जनसंख्या से वास्तविक जनसंख्या 44,981 कम रही। वर्ष 2011 की अवधि तक मास्टर प्लान 2011 में 1980 हैक्टेयर भूमि विकास

योग्य क्षेत्र के अन्तर्गत प्रस्तावित की गयी थी, जिसके विरूद्ध वर्ष 2011 में 2000 हैक्टेयर भूमि विकसित हुयी। इस प्रकार प्रस्तावित विकास योग्य क्षेत्र से 220 हैक्टेयर भूमि अधिक विकसित हुयी।

मास्टर प्लान 1989–2011 में प्रस्तावित विभिन्न भू–उपयोगों का वर्ष 2011 के विद्यमान भू–उपयोग मानचित्र के आधार पर विवेचन करने से स्पष्ट होता है कि पूर्व मास्टर प्लान में औद्योगिक भू–उपयोग के अन्तर्गत 236 हैक्टेयर भूमि प्रस्तावित की गयी थी, जिसके स्थान पर वर्ष 2011 में 478 हैक्टेयर भूमि औद्योगिक उपयोग के अन्तर्गत उपयोग में ली जा रही है। रूपनगढ़ रोड़ पर प्रस्तावित औद्योगिक उपयोग के अतिरिक्त इससे लगते हुए उत्तर की ओर की भूमि औद्योगिक प्रयोजनार्थ उपयोग में ली गयी है। इसके अतिरिक्त राष्ट्रीय राजमार्ग 79ए पर मास्टर प्लान में ग्राम सलोरा के समीप जो भूमि परिधि नियंत्रण पट्टी के अन्तर्गत प्रस्तावित की गयी थी वहां पर रीको द्वारा औद्योगिक क्षेत्र विकसित किया गया है।

पूर्व मास्टर प्लान में आमोद–प्रमोद उपयोग के अन्तर्गत वर्ष 1989 में लगभग 11 हैक्टेयर भूमि आमोद–प्रमोद के लिए उपयोग में ली जा रही थी जिसे वर्ष 2011 के प्रस्तावों में बढ़कार 281 हैक्टेयर प्रस्तावित की गयी। वर्ष 2011 के विद्यमान भू–उपयोग विवेचण के अनुसार आमोद–प्रमोद उपयोग के अन्तर्गत अभी भी 11 हैक्टेयर भूमि ही उपयोग में ली जा रही है। इससे स्पष्ट है कि विगत 20 वर्षों में आमोद–प्रमोद उपयोग के अन्तर्गत प्रस्तावित किसी भी स्थल का विकास नहीं हुआ है।

सार्वजनिक एवं अर्द्धसार्वजनिक उपयोग के अन्तर्गत मास्टर प्लान 1989–2011 में 160 हैक्टेयर भूमि प्रस्तावित की गयी थी, जिसके विरूद्ध वर्ष 2011 में 277 हैक्टेयर भूमि विकसित हुयी है। इस प्रकार इस उपयोग के अन्तर्गत लगभग 117 हैक्टेयर भूमि अधिक विकसित हुयी है।

पूर्व मास्टर प्लान प्रस्तवों में वर्ष 2011 की अनुमानित जनसंख्या 2,00,000 के आवासन हेतु 818 हैक्टेयर भूमि आवासीय उपयोग हेतु प्रस्तावित की गयी थी, जिसके विरूद्ध 700 हैक्टेयर भूमि आवासीय उपयोग के अन्तर्गत विकसित हुयी है।

नगर का विकास पश्चिम की तरफ खोडा गणेश सड़क पर अधिक हुआ है। इस क्षेत्र में पूर्व में परिधि नियत्रंण पट्टी प्रस्तावित की गयी थी इस स्थान पर कृषि भूमि का उप विभाजन कर आवासीय उपयोग के अन्तर्गत भूखण्ड काटे गये है। अजमेर बाईपास पर जिस स्थल पर

भण्डारण हेतु स्थल प्रस्तावित किये गये थे वह भूमि आज भी रिक्त है। उपरोक्त से स्पष्ट होता है कि पूर्व के मास्टर प्लान में औद्योगिक, सार्वजनिक एवं अर्द्धसाजनिक तथा परिसंचरण उपयोग के अतिरिक्त अन्य भू–उपयोग के अन्तर्गत जो भूमि प्रस्तावित की गयी थी वह अपेक्षा के अनुरूप विकसित नहीं हो सकी।

तालिका–3

मास्टर प्लान (1989–2011) में प्रस्तावित भू–उपयोग एवं विद्यमान भू–उपयोग – 2011

क्र. सं.	भू – उपयोग	मास्टर प्लान 1989–2011 में प्रस्तावित भू–उपयोग		विद्यमान भू–उपयोग–2011	
		क्षेत्रफल (हैक्टेयर)	विकसित क्षेत्र का प्रतिशत	क्षेत्रफल (हैक्टेयर)	विकसित क्षेत्र का प्रतिशत
1	आवासीय	818	45.95	700	35.00
2	वाणिज्यिक	81	4.55	75	3.75
3	औद्योगिक	236	13.26	478	23.90
4	राजकीय	20	1.12	8	0.40
5	आमोद–प्रमोद	281	15.79	11	0.55
6	सार्वजनिक एवं अर्द्ध सार्वजनिक	160	8.99	277	13.85
7	परिसंचरण	184	10.34	451	22.55
कुल विकसित क्षेत्र		**1780**	**100.00**	**2000**	**100.00**
8	राजकीय आरक्षित	–	–	40	–
9	कृषि एवं वन भूमि	–	–	56	–
10	रिक्त भूमि	–	–	316	–
11	जलाशय व पहाड़ी क्षेत्र	–	–	138	–
कुल नगरीयकृत क्षेत्र		**1780**	–	**2550**	–

2.7 विद्यमान भू–उपयोग

किशनगढ़ नगर पालिका सीमाके अन्तर्गत4,579 हैक्टेयरभूमि आती है,जिसमें से 2,000 हैक्टेयर भूमि विकसित क्षेत्र तथा शेष भूमि कृषि, वन, जलाशय, पहाड़ एवं खुली भूमि के अन्तर्गत आती है। क्षेत्र का जनघनत्व 61 व्यक्ति प्रति हैक्टेयर तथा विकसित क्षेत्र का

2.7.1 आवासीय

किशनगढ़ नगर में आवासीय उपयोग के अन्तर्गत 700 हैक्टेयर भूमि आती है जिसमें 1,55,019 व्यक्ति निवास करते हैं। यहां का आवासीय जनघनत्व 221 व्यक्ति प्रति हैक्टेयर है। किशनगढ़ में सर्वाधिक जनघनत्व वाले क्षेत्र रेलवे लाईन तथा किशनगंज अजमेर रोड़ के मध्य स्थित है।किशनगढ़ के पुराने चार दिवारी क्षेत्र में जनसंख्या घनत्व अपेक्षाकृत कम है। जिसका प्रमुख कारण चार दिवारी क्षेत्र के आस–पास प्रमुख आर्थिक गतिविधियों के केन्द्र नहीं होने के कारण यहां के निवासियों का बाह्य क्षेत्रों में आवास बनाकर रहना है। रेलवे लाईन एवं बाईपास के मध्य स्थित क्षेत्रों में मध्यम जनघनत्व है।आदित्य मिल से पूर्व की ओर अजमेर रोड़ एवं खोड़ा गणेश सड़क के आस–पास नये विकसित आवासीय क्षेत्रों में निम्न जनघनत्व है।

2.7.1(अ) आवासन

वर्ष 2001 की जनगणना के अनुसार किशनगढ़ नगर में परिवारों की संख्या 27,131 थी जो 20,720 आवासों में निवास करते थे। वर्ष 2011 की जनगणना के अनुसार परिवारों की संख्या बढ़कर 28,054 हो गई। उक्त परिवार 27,969 आवासों में निवास करते है। उक्त से स्पष्ट है कि वर्ष 2001 में आवासों की उपलब्धता बहुत कम थी जो वर्ष 2011 में बढ़कर सामान्य स्थिति में पहुँच गई।

2.7.1(ब) कच्ची बस्तियां

किशनगढ़ नगर में कुल 15 कच्ची बस्तियां हैं जो कि मुख्यतया वार्ड संख्या 1, 2, 5, 11, 21, 22, 23, 25, 26, 28, 29, 32, 42, 44 एवं 45 में स्थित हैं। कुछ कच्ची बस्तियां नगर में वन विभाग, नगर परिषद एवं जलदाय विभाग की भूमि पर विकसित हो गई हैं जिनमें वर्तमान में आधारभूत सुविधाओं का अभाव है। तालिका–5 में किशनगढ़ नगर में कच्ची बस्तियों का विवरण दिया गया है जिससे स्पष्ट होता है कि किशनगढ़ में आधार वर्ष 2011 में लगभग 38,092 व्यक्ति कच्ची बस्तियों में निवास कर रहे हैं जो कुल जनसंख्या का 24.57 प्रतिशत है।

तालिका–5

कच्ची बस्ती, किशनगढ़, 2011

क्र.सं.	कच्ची बस्ती का नाम	वार्ड संख्या	परिवार	जनसंख्या
1	रावतसर वाचनालय के पीछे	44–45	431	1724
2	सुमेर नगर एच.बी के पहले	22	304	1216
3	कृष्णपुरी	11	482	1928
4	आर्य समाज के पीछे	28	15	60
5	बिहारी पोल	32	71	284
6	मेहनत नगर जयपुर रोड़	42	236	944
7	उद्योग बस्ती	44	65	260
8	शिवाजी नगर	29	172	688
9	सरदार सिंह ढाणी के रास्ते पर	02	727	2908
10	पटाखा फैक्ट्रीयां	21	440	1760
11	देव डूंगरी निराज बावड़ी रोड़	26	941	3764
12	गांधी पार्क के पीछे	05	2091	8364
13	सज्जन गढ़ रोड़ पर	01	1230	4920
14	महावीर आजाद I & II III	25	1523	6092
15	राजाखेड़ी दीपक नगर	23	795	3180
	योग		**9523**	**38092**

स्त्रोतः नगर परिषद, किशनगढ़

2.7.1(स) शहरी नवीनीकरण

किशनगढ़ नगर के किसी भी क्षेत्र में नगरीय नवीनीकरण का कार्य हाथ में नहीं लिया गया है। रेलवे लाईन एवं अजमेर रोड़ के मध्य स्थित आदित्य मिल की भूमि पर निजी विकासकर्ताओं द्वारा आवासीय योजना विकसित कर पुनर्विकास का कार्य किया गया है। इसी क्षेत्र में कुछ स्थलों पर पॉवर लूम्स बंद हो गये हैं उनकी भूमि पर वाणिज्यिक परिसरों का निर्माण किया गया है।

2.7.2 वाणिज्यिक

किशनगढ़ नगर का मुख्य वाणिज्यिक क्षेत्र राष्ट्रीय राजमार्ग–8 पर कृषि उपज मण्डी से खोडा गणेश जी को जाने वाली सड़क के तिराहे तक के भाग पर दोनों ओर स्थित है। इसके

अतिरिक्त कुछ वाणिज्यिक क्षेत्र किशनगढ़ से रूपनगढ़ को जाने वाली सड़क, नगर के चार दिवारी के अन्दर वाले क्षेत्र की मुख्य सड़कों के दोनों ओर, मदनगंज किशनगढ़ को जोड़ने वाली सड़क के सहारे दोनों ओर खुदरे व्यापार की दुकानें स्थित हैं। औद्योगिक क्षेत्र से अजमेर की ओर जाने वाले बाईपास के कुछ भाग पर ट्रांसपोर्ट कम्पनियों के कार्यालय संचालित हैं। किशनगढ़ भीलवाड़ा बाईपास पर राष्ट्रीय राजमार्ग–8 से नई आबादी तक के भाग में सड़क के दोनों ओर तथा बाईपास जंक्शन से जयपुर रोड़ पर टोल प्लाजा तक सड़क के दोनों ओर वाहन मरम्मत की दुकानें,ढ़ाबे तथा अन्य व्यावसाय की दुकानें स्थित हैं। किशनगढ़ अजमेर रोड़ पर होटल संचालित हैं, जिनमें सरोज होटल, कुलदीप होटल, मनीश होटल आदि प्रमुख है। किशनगढ़ नगर में इन सभी बाजारों में लगभग 3500 से 4000 दुकानें हैं।

राष्ट्रीय राजमार्ग–8 पर 24 हैक्टेयर भूमि पर धान मण्डी स्थित है, जिसमें खाद्यान एवं अन्य वाणिज्यिक कृषि उत्पादों का थोक व्यापार होता है। नगर की आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु सब्जी मण्डी अजमेर रोड़ पर रेलवे स्टेशन के समीप स्थित है। कृषि मण्डी यार्ड के समीप भारतीय खाद्य निगम के गोदाम स्थित हैं।

2.7.3 औद्योगिक

किशनगढ़ नगर अजमेर जिले में प्रमुख औद्योगिक केन्द्र के रूप में विकसित हुआ है। पूर्व में यहां पर सूती वस्त्र उद्योग की दो प्रमुख मिलें यथा महाराजा मिल एवं आदित्य मिल थी।वर्तमान में उक्त दोनों मिल अस्तित्व में नहीं हैं। वर्तमान में मार्बल उद्योग यहां का प्रमुख उद्योग है। किशनगढ़ का नाम देश में मार्बल नगरी के नाम से प्रसिद्ध है। यहां पर राज्य के सभी भागों से संगमरमर आता है तथा परिष्करण के पश्चात् विक्रय किया जाता है।मार्बल उद्योग रूपनगढ़ रोड़ पर 300 हैक्टेयर भूमि पर फैला हुआ है,जिसमें लगभग 4 से 5 हजार श्रमिक कार्यरत हैं।

नगर में पॉवर लूम्सएवं साइजिंग उद्योग मदनगंज क्षेत्र में संचालित है,जहां पर मोटा कपड़ा तैयार किया जाता है। यह कपड़ा जयपुर, मुम्बई एवं दिल्ली आदि नगरों में भेजा जाता है। राजस्थान राज्य औद्योगिक, विकास एवं विनिमय निगम द्वारा किशनगढ़ भीलवाड़ा बाईपास पर सिलोरा ग्राम में 134 हैक्टेयर भूमि पर औद्योगिक क्षेत्र विकसित किया है। इस औद्योगिक क्षेत्र में खनिज पिसाई की इकाइयां स्थापित हैं तथा टैंक्सटाइल पार्क के लिए भी कुछ क्षेत्र